॥ इदं राष्ट्राय इदन्न मम ॥

'योग महोत्सव' व 'धर्मयुद्ध' 2014 की रणनीति

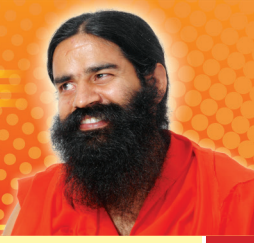

(1) **एक-एक दिन एक जिन्दगी के बराबर है–** अब हमें सिर-धड़ की बाजी लगाकर काम करना है। व्यक्ति ठान ले तो क्या नहीं कर सकता? मरता क्या न करता? सचमुच यदि अब हम 100% ऊर्जा से नहीं लगे तो यह पराजय होगी भारतीय ऋषि परम्परा की, मर्यादाओं की, शहीदों के बलिदानों की, सत्य की, न्याय की, धर्म की, देवत्व की और सात्विकता की, क्या ये हमें मंजूर है? नहीं। क्योंकि अपने ऊपर देश का बहुत बड़ा कर्ज है, जाने से पहले उस फर्ज को हमें पूरा करके जाना है। महर्षि अरविन्द के अनुसार यह भागवत् मुहूर्त्त चल रहा है और भावगत् मुहूर्त्त में थोड़ा सा किया गया पुरुषार्थ भी एक बड़ा महान् परिणाम लाने वाला होता है।

(2) **"कार्यं (लक्ष्यं) वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्"–** लक्ष्य को प्राप्त करुँगा या मरुँगा। देश बचाने के लिए प्रत्येक राष्ट्रभक्त नागरिक को इसी संकल्प की अवश्यकता है। जो जिसकी महिमा को जानता है वह उसी में तल्लीन हो जाता है। जैसे- जो बल की महिमा जानता है, व्यायाम में जुट जाता है, धन की महिमा जानता है धन कमाने में जुट जाता है, जो ध्यान की महिमा जानता है ध्यान लगाने में डूब जाता है, जो रूप की महिमा जानता है उसे सजाने और संवारने के लिए घंटो का समय और हजारों लाखों रुपये भी खर्च करता है। इसी प्रकार जप-तप की महिमा, योगसेवा व राष्ट्रसेवा की महिमा, राजनीति की महिमा, सम्बन्धों की महिमा को जो जानता है वह उसी के लिए जीने लगता है और राष्ट्र की महिमा को जो जानता है वह उसके लिए फांसी के फन्दे को भी गले का हार समझकर खुशी से स्वीकार कर लेता है।

(3) **एक बात सदा याद रखें, तात्कालिक रूप से अपनी या दूसरों की सफलता या असफलता को देखकर बहकने वाला, विचलित होने वाला या आपा खो देने वाला व्यक्ति कभी भी कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकता। हमें, छपास और दिखास की प्रवृत्ति से दूर रहकर, दुनियाँ के हर आवेग में अड़िग रहने वाले, कृतज्ञता पूर्वक कर्तव्य का पालन करने वाले व संसार में दिव्यता व शुभ का संचार करने वाले पूर्णजागृत, पूर्णसमर्थ व कृतज्ञ कार्यकर्त्ता बनना है। गीता कहती है–"न हि पुण्यकृत् कश्चित् दुर्गतिं तात् गच्छति"।**

(4) **भारत की पहचान–** सदा ही योग व अध्यात्म से रही है। आज भी हमें 23 मार्च, 2014 को एक वर्ल्ड रिकॉर्ड योग व अध्यात्म का बनाना है तथा चुनाव 2014 में दूसरा वर्ल्ड रिकॉर्ड व्यवस्था परिवर्तन का स्थापित करना है। जब तक लम्बी लड़ाई व लम्बे संघर्ष की सोच नहीं होगी तब तक बड़े परिवर्तन का स्वप्न, स्वप्न ही बनकर रह जायेगा। कृतघ्न व्यक्ति जीवन में कभी भी बड़ा कार्य नहीं कर पाता है और मात्र परिवर्तन ही हमारा लक्ष्य नहीं है अपितु उसे एक सही दिशा में भी हमें ले जाना है। परिवर्तन तो 1977 में भी हो गया था किन्तु दिशा सही न होने से कोई ठोस परिणाम हमारे सामने निकल कर नहीं आया।

(5) **राजनीति में वॉक्यूम–** देश में योग व अध्यात्म में एक वॉक्यूम आया जो श्रद्धेय स्वामी रामदेव जी महाराज व देश के अन्य श्रेष्ठ सन्तों ने भर दिया, इसी प्रकार आज देश की राजनीति में भी एक वॉक्यूम आया है जिसे भरने के लिए श्रद्धेय स्वामी जी महाराज ने मोदी जी को आशीर्वाद दिया है।

(6) **देश हमेशा सत्य के साथ खड़ा होता है–** पिछले 4 राज्यों के चुनाव परिणाम से यह साबित होता है कि कांग्रेस आज पराजय का पर्याय बन चुकी है और संसार में किसी भी क्षेत्र में हारने वाले व्यक्ति या दल के साथ कोई खड़ा नहीं होता जैसे रावण के साथ स्वयं उसके भाई और पत्नी भी खड़े नहीं हुए दूसरी तरफ विजय और सत्य के साथ सारा संसार उसी प्रकार खड़ा होता है जिस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम राम के साथ खास लोगों से लेकर आम लोग आदिवासी व वनवासी भी खड़े हो गये थे। आज हम सब राष्ट्रभक्त कार्यकर्त्ताओं को यह संकल्प लेना है कि **मेरे जिन्दा रहते, मैं अपने देश का, गुरु का व अपने संस्थान का कुछ भी नहीं बिगड़ने दूंगा।**

(7) **कृतज्ञता की महिमा–** जीवन को एक शब्द में कहें तो वह है- **कृतज्ञता**। भगवान् के प्रति, मातृभूमि के प्रति, गुरु व माता-पिता के प्रति तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के प्रति पूर्ण कृतज्ञता। **जीवन का सच- जिसे मैने अनुभव किया व जीया, वह है- अशुभ से बचे रहें और अपने सामर्थ्य को योग व पुरुषार्थ से पूर्ण जागृत करके सम्पूर्ण सामर्थ्य को सेवा में लगा दें।** मुझे क्या मिलेगा ये कभी न सोचें अपितु इससे सबको (समष्टि को) व देश को क्या मिलेगा, यह सोचना चाहिए। अपना अधिमूल्यन व अवमूल्यन कभी न करें। यश को विनम्रता पूर्वक स्वीकार करना चाहिए।

(8) **कृतघ्नता–** पुण्यात्मा को सताने वाले व कृतघ्न व्यक्ति को उसके कर्म का फल तुरन्त मिलता है। करॅप्ट (Corrupt), करेक्टरलेश (Characterless) व क्रिमीनल (Criminal) से भी कृतघ्न व्यक्ति अधिक पापी होता है। कृतघ्न व्यक्ति का इस जन्म में तो क्या इस सृष्टि में भी उद्धार नहीं होता है। अत: हमें प्रेम, कृतज्ञता, समझदारी व जिम्मेदारी के साथ कर्त्तव्यभाव से भगवान् का यन्त्र बनकर समर्थ गुरुसत्ता के मार्गदर्शन में ज्ञान व निष्ठा के धरातल पर रहकर पूर्ण पुरुषार्थ करते हुए जीवन के अन्तिम गन्तव्य को (लक्ष्य) को प्राप्त करना है।

(9) **जो व्यक्ति संगठन से सेवामुक्त हो चुके हैं या कर दिये गये हैं उनके साथ महर्षि पतंजलि के अनुसार हमें उसकी पूर्णरूप से उपेक्षा करनी है। "मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदु:खपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्त प्रसादनम्" (योग. 2/33)। जिस व्यक्ति की संगठननिष्ठा, गुरुनिष्ठा, राष्ट्रनिष्ठा व सेवानिष्ठा खत्म हो गयी है उसके साथ हम व्यक्तिगत सम्बन्ध भी न रखें क्योंकि संगठन, सेवा व गुरु के कारण से ही हमारा सम्बन्ध जुड़ा था, ऐसे कृतघ्न व्यक्ति के साथ सम्बन्ध रखना भी एक बहुत बड़ा पाप है।**

(10) **धर्मनिष्ठ व न्यायाधिष्ठित राजनैतिक व्यवस्था–** दो काम दुनिया में सबसे कठिन हैं, **एक**–स्वाभाव में परिवर्तन, **दूसरा**–बड़े व्यक्तित्व व नेतृत्व का निर्माण। नेतृत्व को षड्यन्त्रों की सूक्ष्म समझ होना बहुत जरूरी है। राईटिस्ट (Rightist), लेफ्टिस्ट (Leftist), सोशियोलिस्ट (Socialist), कैप्टेलिस्ट (Capitalist) व अपोर्च्युनिस्ट्स (Opportunities) की भीड़ में सच्चे नेशनेलिस्ट (Nationalist) तथा ऑनेस्ट (Honest) लोगों को खोजना बहुत कठिन काम है। भीड़ ने कभी भी नेतृत्व नहीं किया। रण में विजय उन्हीं को मिलती है जो रणनीति के साथ योजनापूर्वक, गम्भीरता के साथ पूर्णपुरुषार्थ करते हैं। वेद में भी कहा है–**अकर्मा दस्यु:।** रणनीति के बिना कभी भी रण जीत ही नहीं सकते। राजनीति में शुभ का आधान, सत्ता में सत्यप्रतिष्ठा, व्यवस्थाओं को न्यायपूर्ण बनाना तथा **धर्मविहीन राजनीति के स्थान पर धर्मनिष्ठ व न्यायाधिष्ठित राजनैतिक व्यवस्था कायम करना हमारा लक्ष्य है।** हम 50 से 100 वर्षों की एक तात्कालिक व दीर्घकालिक रणनीति व योजनापूर्वक भारत को विश्व की सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक व आर्थिक महाशक्ति बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। पतंजलि योगपीठ, स्वदेशी अभियान, आचार्यकुलम्, वैदिक गुरुकुलम्, पतंजलि विश्वविद्यालय, सेवाव्रती प्रकल्प तथा गाँव-गाँव तक फैली संगठन की पाँचों इकाईयों के माध्यम से स्वस्थ्य, समृद्ध, संस्कारवान्, परमवैभवशाली, धर्मनिष्ठ व पुरुषार्थनिष्ठ भारत बनाने के लिए 2014, 2019, 2024 व 2029 में निरन्तर व्यक्ति व व्यवस्था में शुभ की प्रतिष्ठा करते रहेंगे और अन्तत: देश में सत्य, धर्म व न्याय की स्थापना का हमारा लक्ष्य पूरा होगा। और इस संकल्प को पूरा करने के लिए हमें जो तात्कालिक कार्य करना है, उसकी रणनीति इस प्रकार है।

जिले में योजनापूर्वक कार्य करने की प्रक्रिया

सर्वप्रथम कार्य को तीन चरणों में विभाजित करना है जो हमें आगामी तीन माह में करने हैं–
प्रथम चरण में आज से लेकर 1 मार्च पर्यन्त, **द्वितीय चरण** में 1 मार्च से 23 मार्च और **तृतीय चरण** में 24 मार्च से मतदान पर्यन्त।

प्रथम चरण (दिसम्बर, जनवरी व फरवरी माह)

1. **कार्यालय की स्थापना–** किसी मंदिर, आर्य समाज, आश्रम अथवा अपने संगठन से जुड़े समर्थ व उदार व्यक्ति से समुचित स्थान पर कार्यालय के लिए एक कमरा ले लें, न मिलने पर 3 से 5 हजार रुपये किराये पर भी ले सकते हैं। महानगरों में उससे भी ज्यादा खर्च होने पर खर्च की पूर्ति हेतु नियमित दानदाताओं से सहयोग लेकर कार्यालय की अतिशीघ्र स्थापना करें।
2. **कार्यालय प्रभारी की नियुक्ति–** कार्यालय प्रभारी के लिए तुरन्त एक वरिष्ठ नागरिकों का अर्थात् रिटायर्ड व्यक्तियों का एक योग शिविर लगायें तथा सेवा के लिए आह्वान करें तथा उन्हीं में से कार्यालय प्रभारी का चयन करें, कार्यालय के लिए 2-3 व्यक्तियों का चयन करके संयुक्त रूप से भी जिम्मेदारी दी जा सकती है।
3. **कार्यकर्त्ताओं का चयन–** योग शिक्षकों का निष्पक्ष और न्यायपूर्वक चयन तथा पुरानी समितियों को प्रशिक्षण देना है। जिला स्तर पर कम से कम 500, प्रत्येक तहसील स्तर पर 100 तथा वार्ड व प्रखण्ड स्तर पर 10-10 सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का चयन करके उन्हें गम्भीरता पूर्वक प्रशिक्षण दें और नये कार्यकर्त्ताओं को 51/- रुपये का कार्यकर्त्ता सदस्य बनाकर उन्हें झोला प्रदान करें जिससे कि आगे सेवा करने में उन्हें अनुकूलता रहे। **1 से 15 मार्च तक मुख्यालय के द्वारा दिये गये प्रारूप के अनुसार योग-निर्देशिका प्रकाशित करवाना अनिवार्य है।**
4. **कार्य का विभाजन एवं प्रशिक्षण–** उपरोक्त कार्यकर्त्ताओं में से ही नयी समितियों के निर्माण, प्रशिक्षण व निरीक्षण हेतु टीम बनायें। जो कार्यकर्त्ता योग तो नहीं सिखा पाते किन्तु संगठन का कार्य अच्छी प्रकार कर सकते हैं उन्हें समिति के निर्माण और निरीक्षण का तथा जो केवल योग प्रशिक्षण के लिए ही समय दे सकते हैं वे शनिवार व रविवार को अथवा जो भी समय उन्हें अनुकूल हो उसमें प्रशिक्षण की सेवा का दायित्व निभायें और जो संयुक्त रूप से तीनों कार्य कर सकें तो बहुत ही अच्छी बात है। समितियों का निर्माण **"संगठन कार्य-पद्धति"** में लिखित निर्देशानुसार ही करें अर्थात् उसमें समाज के सभी वर्गों के सात्विक समर्थ व जागरूक लोगों की भागेदारी हो। प्रशिक्षण शिविर 3-5 दिन का रखें। प्रशिक्षण में योग, आयुर्वेद, घरेलू उपचार, स्वदेशी व भारत स्वाभिमान के विषय में विस्तार से बतायें।
5. **प्रचार सामग्री का वितरण–** कार्यालय से नये सक्रिय कार्यकर्त्ताओं व योग शिक्षकों के लिए झोला, टी-शर्ट, पहचान-पत्र व प्रोत्साहन कार्ड का निष्पक्ष वितरण करें तथा प्रचार-प्रसार सामग्री का योजनापूर्वक प्रकाशन करावें। **सेवा-प्रोत्साहन कार्ड केवल सक्रिय कार्यकर्त्ता को ही दें।**
6. **नियमित दानदाताओं की सूची–** कार्यालय प्रबन्धन में नियमित दानदाताओं की एक सूची बनाकर उनसे मासिक सहयोग लेना तुरन्त शुरू कर दें।
7. **लीगल टीम–** जिले में एक लीगल टीम अवश्य बना लें। यह टीम कार्यक्रमों की अनुमति लेने का कार्य करेगी और 2014 के दौरान बहुत से कानूनी कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।
8. **स्थान का चयन–** योग महोत्सव के लिए स्थान की अनुमति लेते समय किसी सरकारी स्थान का चयन न करें क्योंकि आचार संहिता लगने पर उसे रद्द किया जा सकता है, कोई भी प्राईवेट स्थान जो शहर के बीच में हो उसी का चयन करें।
9. **सोशल मीडिया टीम–** जिले कार्यालय में एक सोशल मीडिया की टीम भी अवश्य बना लें, इसमें युवा भारत के कार्यकत्ताओं को प्राथमिकता दें। प्रतिदिन एक या दो घण्टे कार्यालय में आकर सेवा करने हेतु उन्हें प्रेरित करके सेवा में लगायें।

नोट : सक्रिय कार्यकर्त्ता का मापदण्ड– कम से कम 6 माह से नियमित योगकक्षा चलाने वाले, निरन्तर समिति निर्माण, प्रशिक्षण व निरीक्षण का कार्य करने वाले तथा कम से कम 2 माह तक निरन्तर घर-घर जाकर निमंत्रण देने वाले कार्यकर्त्ता को ही सक्रिय कार्यकर्त्ता माना जायेगा।

कार्यालय के संसाधन

कार्यालय संसाधनों में एक मोबाईल फोन, ईन्टरनेट (डाटा कार्ड), कम्प्यूटर (डेस्कटॉप), प्रिन्टर, कार्यालय का साईनबोर्ड, कुर्सी मेज, अलमारी, माईक, प्रचार-प्रसार सामग्री तथा दो पहिया व चार पहिया वाहन आदि सम्मिलित हैं। **कार्यालय का साईनबोर्ड पूरे देश में सब जगह एक ही जैसा रहेगा।**

कार्यालय प्रभारी के दायित्व

1. **संवाद व सम्पर्क–** कार्यालय प्रभारी संगठन की पाँचों इकाईयों से बराबर **संवाद-सम्पर्क** बनायें रखें।
2. सम्पूर्ण विवरण व मोबाईल नम्बर के साथ जिला, तहसील, बूथ, वार्ड, प्रखण्ड व ग्राम प्रभारियों तथा वरिष्ठ एवं सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का डेटाबेश कम्प्यूटर पर तैयार करें।
3. पाँचों इकाईयों के कार्यों की साप्ताहिक एवं मासिक **प्रगति रिपोर्ट** तैयार करना।
4. प्रतिमाह दान एवं सेवा सहयोग के खर्च की **ऑडिट रिपोर्ट** तैयार करना।
5. जिले में **रसीद बुक्स का सम्पूर्ण रिकॉर्ड** कम्प्यूटर में रखना।
6. जिला, तहसील, प्रखण्ड, वार्ड, ग्राम व बूथ स्तर तक योग कक्षाओं का स्थान, समय, योग शिक्षक का नाम व मोबाईल नम्बर आदि की सूची बनाना अर्थात् जिले की कुल योग कक्षाओं का रिकॉर्ड रखना।
7. प्रान्तीय कार्यालय अथवा केन्द्रीय कार्यालय से मेल, पत्रक या फोन आदि किसी भी माध्यम से आने वाले निर्देश को प्राप्त करना तथा अंतिम कार्यकर्त्ता तक उसे संप्रेषित करना।
8. कार्यालय में आने वाले नये व्यक्तियों में से योग्य व्यक्तियों का चयन करके उन्हें समुचित प्रशिक्षण आदि दिलाकर जिला संगठन से सलाह करके सामर्थ्यानुसार यथायोग्य दायित्व भी उन्हें प्रदान करें तथा योग संदेश तथा 'स्वदेश स्वाभिमान' का सदस्य बनाकर उन्हें संगठन से जोड़े और कुछ व्यक्तियों को योग संदेश के विस्तार हेतु योग संदेश का प्रभारी भी बनाया जा सकता है।
9. कार्यालय में उपलब्ध प्रचार-प्रसार सामग्री का निष्पक्ष व न्यायपूर्ण वितरण करना।
10. कार्यालय के सम्पूर्ण संसाधनों का एक **स्टॉक रजिस्टर** कम्प्यूटर में सुरक्षित करके रखना।
11. जिले की **दानराशि व सहयोग राशि का सम्पूर्ण लेखा-जोखा** कार्यालय में रिकॉर्ड रखना।
12. प्रतिदिन कम से कम आधे से एक घंटा **सोशल मीडिया** का कार्य करना।

13. नियमित दानदाताओं की सूची बनाकर उनसे निरन्तर संवाद-संपर्क बनायें रखें तथा प्रतिमाह 500/- रुपये से अधिक दान देने वाले दानदाताओं को सेवा कार्यों की मासिक प्रगति रिपोर्ट भी मेल या S.M.S. आदि के माध्यम से प्रेषित करें।
14. जिला संगठन की साप्ताहिक व मासिक प्रगति रिपोर्ट प्रान्तीय व केन्द्रीय कार्यालय को मेल करना।
15. समितियों के निर्माण, प्रशिक्षण व निरीक्षण के कार्य में लगे सक्रिय कार्यकर्त्ता को 51/- रुपये का **कार्यकर्त्ता सदस्य** बनाकर तथा पुराने कार्यकर्त्ता सदस्य की सदस्यता का भी नवीनीकरण करके उन्हें झोला, प्रचार सामग्री उपलब्ध कराना व टी-शर्ट 50/- रुपये में उपलब्ध कराना कार्यालय प्रभारी का दायित्व है।

नोट : 1. सभी कार्यालय प्रभारी जिला संगठन के साथ पूर्ण समन्वय स्थापित करके पूर्ण विवेक, विनम्रता व गम्भीरता के साथ प्रेम, कृतज्ञता, समझदारी व जिम्मेदारी से सेवा करें। 2. सभी कार्यालय प्रभारी संगठन के द्वारा निर्धारित एक सुनिश्चित फॉर्मेट के अनुसार ही कार्यालय में रिपोर्ट तैयार करें।

सेवा सहयोग के मुख्य चार मापदण्ड या आधार

सेवा के कार्य को आगे बढ़ाने हेतु सेवा सहयोग के रूप में 25 से 30 हजार रुपये की राशि प्रतिमाह जिले को उपलब्ध कराने की हमने योजना बनायी है। सेवा सहयोग को उपलब्ध कराने में चार मुख्य मापदण्ड या आधार रहेंगे।

1. प्रखण्ड, वार्ड, ग्राम व बूथ स्तर पर समितियों के निर्माण, प्रशिक्षण व निरीक्षण के कार्य का जितना विस्तार प्रामाणिक रूप से जिले में होगा उसी अनुपात में उसे सेवा सहयोग मिलेगा।
2. जिस जिले में जितनी अधिक स्थायी योग कक्षायें व योग शिविर रहेंगे उसी अनुपात में उसे सेवा सहयोग मिलेगा।
3. जिले में स्वदेशी के कार्य की जितनी वृद्धि होगी उतना ही जिले को अधिक सेवा सहयोग प्राप्त होगा क्योंकि पतंजलि का यह संकल्प है कि वह संपूर्ण लाभांश को राष्ट्रसेवा में ही समर्पित करता है। हमारा अभियान व्यक्तिगत समृद्धि के लिए नहीं अपितु सेवा व राष्ट्र की सामूहिक समृद्धि के लिए समर्पित है। हमारे उत्पादों की सबसे बड़ी प्रामाणिकता यही है कि पूरी सरकार हमारे खिलाफ होते हुए भी हजारों बार उत्पादों की जाँच कराने के बावजूद भी उनमें कोई कमी नहीं निकाल पायी।
4. समितियों के द्वारा इस राष्ट्रयज्ञ में जितना अधिक से अधिक दान संग्रह किया जायेगा उसी अनुपात में उन्हें सेवा सहयोग उपलब्ध हो पायेगा। अर्थात् इस सेवायज्ञ में जितना सहयोग संगठन से मिले उससे दुगुना या कम से कम बराबर का सहयोग विभिन्न सेवा कार्यों हेतु किसी के सौजन्य से लें। शिविरों के आयोजन, प्रचार-प्रसार सामग्री एवं योग महोत्सव आदि बड़े आयोजनों के समय पूरा सहयोग लोगों के सौजन्य से ही लें। हमें **मूलभूत संसाधन** स्वयं से व संगठन से तथा इससे भी अधिक सहयोग दान के रूप में समाज से प्राप्त करना है। अर्थात् हमें स्वयं से, संगठन से व समाज से- तीनों से ही ऊर्जा प्राप्त करके सेवा करनी है। श्रद्धेय स्वामी जी महाराज ने तो मूलभूत संसाधन के रूप में मात्र एक बार 500/- रुपये अपने गुरुदेव से लिये थे।

सेवा सहयोग के उपयोग हेतु चार मद

1. मोटर-साईकिल या स्कूटी अर्थात् दो पहिये का वाहन लेने में सेवा सहयोग का 50% उपयोग कर सकते हैं, किन्तु वाहन का प्रयोग समितियों के निर्माण, प्रशिक्षण व निरीक्षण में ही करें। सामान्य योगकक्षा या योगशिविर के लिए संसाधनों का प्रयोग न करें। और व्यक्तिगत कार्य हेतु तो संगठन के संसाधनों का प्रयोग कदापि न करें।
2. समिति निर्माण, प्रशिक्षण व निरीक्षण हेतु यदि निजी वाहन का उपयोग कार्यकर्त्ता करता है तो डीजल पेट्रोल का खर्च जिला कार्यालय से ले सकता है।
3. प्रचार-प्रसार सामग्री के प्रकाशन हेतु सेवा सहयोग का उपयोग कर सकते हैं लेकिन प्रचार की योजना व अनुवाद आदि करने में अपव्यय से बचकर मित्तव्ययता को अपनाकर सस्ते से सस्ता छपवाकर वितरित करने की कोशिश करें।
4. कार्यालय प्रबन्धन व वाहनों के बीमा आदि के खर्च में सेवा सहयोग का उपयोग कर सकते हैं।

सेवा सहयोग खर्च करने का अधिकार व प्रक्रिया

जिले की 11 सदस्यीय कार्यकारिणी में प्रस्ताव पारित करके खाता धारक- संरक्षक, जिला प्रभारी, महिला प्रभारी व कोषाध्यक्ष ये चार व्यक्ति खर्च करने के अधिकारी रहेंगे। चारों में से जिला प्रभारी व भारत स्वाभिमान की महामंत्री महिला के हस्ताक्षर अनिवार्य होंगे, बाकी दो में से कोई एक हस्ताक्षर कर सकता है। **जिला स्तर पर भारत स्वाभिमान की महामंत्री महिला का चयन महिला राज्य प्रभारी के द्वारा ही किया जायेगा तथा वह भी महिला समिति में ही कार्य करेगी।** जो भी खर्चे के बिल लगाये जायें वो पक्के होने चाहिए तथा बड़े खर्चे के लिए पहले 2-3 जगह से कॉटेशन मंगवाकर एक निर्णय करके पूर्ण पारदर्शिता के साथ उपरोक्त तीनों जिम्मेदार व्यक्तियों के हस्ताक्षर करायें।

द्वितीय चरण (1 मार्च से 23 मार्च)

द्वितीय चरण में एक मार्च से घर-घर जाकर होली से शुरू होने वाले तहसील स्तर पर योग सप्ताह तथा जिला स्तर पर 23 मार्च को होने वाले योग महोत्सव के लिए निमन्त्रण देने की प्रक्रिया शुरू होगी, इसमें स्वयं स्वामी जी महाराज 1 मार्च को सुबह से सायं तक घर-घर में निमन्त्रण देने की प्रक्रिया का शुभारंभ करेंगे।

घर-घर जाकर निमंत्रण देने का स्वरूप

1. सर्वप्रथम जिले के 500, तहसील के 100-100 तथा वार्ड व प्रखण्ड के 10-10 कार्यकर्त्ता घर-घर जाते समय अपने-अपने क्षेत्र (एरिया) विशेष का विभाजन कर लें।
2. घर-घर जाते समय कार्यकर्त्ता अपने संगठन के निर्धारित गणवेश (ड्रेस) में ही बाहर निकलें। (निर्धारित गणवेश- अंगवस्त्र, झोला, बैच व टी-शर्ट) टी-शर्ट पहनना ऐच्छिक है।
3. घर-घर जाते समय विरोध करने पर उसे विनम्र भाव से सुनना तथा अपनी सेवा व आन्दोलन की बात विनम्रता पूर्वक उसे समझाकर ही आगे बढ़े किसी के भी विरोध करने पर प्रतिक्रिया से बचने के लिए तथा प्रसन्नचित्त रहने के लिए प्रतिदिन **वैदिक शिक्षा** का वाचन, मनन व स्वाध्याय अवश्य करें।
4. विरोध में भी रचनात्मक काम करना सींखे, इसके बड़े उदाहरण हैं-महर्षि दयानन्द और प्रत्यक्ष उदाहरण हैं-श्रद्धेय स्वामी जी महाराज व पूज्य आचार्य श्री।
5. झोले में पीले चावल, योग वाला पत्रक व धर्मयुद्ध 2014 तथा स्वदेशी से सम्बन्धित 2 या 3 प्रकार के पत्रक, स्टीकर, झण्डे, डायरी व पैन आदि अपने साथ लेकर जायें। निमन्त्रण देते समय घर वालों से पूछकर झण्डा या स्टीकर भी घर पर लगाकर आयें। **लाखों कार्यकर्त्ता व करोड़ों राष्ट्रभक्त समर्थकों के घरों पर लगे हुए ये झण्डे व स्टीकर 2014 की महाक्रान्ति के प्रतीक बनेंगे तथा लोग 'भारत स्वाभिमान' का झण्डा अपने घर पर लगाकर गौरव का अनुभव करेंगे।** उसी दौरान संगठन से जुड़कर सेवा करने वाले कार्यकर्त्ताओं की सूची भी साथ-साथ बनाते रहें, उनके

नाम, मोबाईल नम्बर व पता आदि डायरी में नोट कर लें तथा सायं को कार्यालय में आकर वह सूची कार्यालय प्रभारी को दे दें।

6. 50 से 100 कार्यकर्त्ताओं के नाम कार्यालय में आने पर उन्हें प्रशिक्षण देकर वार्ड, बूथ व प्रखण्ड आदि की जिम्मेदारी में उन्हें सुनियोजित करें। अति योग्य व्यक्ति होने पर उसे जिला स्तर पर भी जिम्मेदारी दी जा सकती है।
7. घर-घर जाते समय नियमित दानदाताओं की सूची भी सम्पूर्ण पता व मोबाईल नम्बर सहित बनाते रहें और इसकी जानकारी प्रतिदिन अथवा साप्ताहिक कार्यालय प्रभारी को देते रहें।
8. **ऑन-लाईन रजिस्ट्रेशन** करने के लिए घर वालों का फोन लेकर उनकी सहमति से उसी समय एक मिस-कॉल करें। लभगभ 20 से 30 करोड़ लोगों का ऑन-लाईन रजिस्ट्रेशन कराकर इसका भी हमें एक रिकॉर्ड कायम करना है साथ ही उन्हें योग संदेश के सदस्य बनाकर प्रतिमाह योग संदेश पढ़ने के लिए भी प्रेरित करें।
9. घर-घर जाते समय योग सप्ताह व योग महोत्सव के लिए V.I.P. व V.V.I.P. आदि पास उन्हें देकर आयें तथा योग के **वर्ल्ड रिकॉर्ड** में सम्मिलित होने के लिए उन्हें प्रेरित करें।

तृतीय चरण (24 मार्च से मतदान पर्यन्त)

सत्ता व व्यवस्था परिवर्तन– इस कार्य हेतु हमें 24 मार्च से पुन: 1 मार्च की तरह ही योजना पूर्वक घर-घर जाना है और मतदान के दिन लोगों को अपने मुद्दों के लिए मतदान करने के लिए घर से बाहर निकालना है। इस ऐतिहासिक परिवर्तन के लिए लोगों का माइण्ड सेट तैयार करना है। मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाने से देश को कालाधन भी मिलेगा और भ्रष्टाचार भी मिटेगा तथा ये दोनों काम होने से जब लाखों करोड़ रुपये देश के विकास में लगेगा तो महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, तथा सामाजिक व आर्थिक गैर-बराबरी दूर होगी क्योंकि ये सब समस्यायें कालाधन व भ्रष्टाचार के ही साईड-इफेक्ट हैं। घर-घर सम्पर्क से जन-जागरण अभियान में 2-3 बातों की चर्चा हमें अवश्य करनी है कि आपके एक वोट से आपको 12.5 लाख रुपये तथा देश को 1 हजार लाख करोड़ मिलेगा। तथा आगे भी देश लूटने से बचेगा। अत: वोट फोर करेप्शन फ्री इंडिया, वोट फोर ब्रिंगिग बैक ब्लैकमनी, वोट फोर व्यवस्था परिवर्तन, वोट फोर जस्टिस, वोट फोर आर्थिक आजादी एवं अन्त में इन सब कामों के लिए वोट फोर मोदी की मुहिम चलानी है। **(1)** 4 जून, 2011 की क्रूरता व बर्बरता तथा उसके बाद भी निरन्तर झूठे केस और पूरी ताकत झोककर दुष्प्रचार व षड्यन्त्रों से यह साबित होता है कि ये कालाधन इसी पार्टी के लोगों का है और यही भ्रष्टाचारी है। **(2)** मोदी जी व उनके समर्थक दलों को लगभग 300 सीटें मिलेंगी तो ही मोदी जी देश में बड़ा कार्य कर पायेंगे, इसके अलावा किसी भी राजनैतिक दल का कोई एम.पी. बनता है तो ऐसे 2-4 या 10-20 लोग भी यदि जीत जायें तो भी, न तो कालाधन वे ला सकेंगे, न ही भ्रष्टाचार मिटा सकेंगे और न ही वे व्यवस्था को बदल सकेंगे। हमारे सभी मुद्दे तो तभी पूरे होंगे जब मोदी जी 300 सांसदों के साथ देश के प्रधानमंत्री बनेंगे, **(3)** **"हमारे सपनों का भारत"** नामक पुस्तक से कांग्रेस पार्टी के 67 वर्षों के लाखों करोड़ के घोटाले, लूट, भ्रष्टाचार तथा सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व राजनैतिक पापों के बारे में सबको बताना साथ ही संसद में कांग्रेस का समर्थन देने वाले लोगों का चरित्र भी देश को बताना है क्योंकि वे भी न्याय व्यवस्था व शास्त्र के अनुसार कांग्रेस के पाप में बराबर के भागीदार हैं, उन दलों को वोट देना भी परोक्ष रूप से कांग्रेस को ही वोट देना है। राष्ट्रीय मुद्दों का पत्रक तो आपको मुख्यालय से मिलेगा उसमें आप लोकसभा के स्थानीय या प्रान्तीय मुद्दों खुद जोड़ सकेंगे। शेष मुद्दे धर्मयुद्ध, 2014 वाले पत्रक में दिये जायेंगे।

राजनीति में शुभ का आधान– 23 मार्च को योग का एक वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के पश्चात् राजनीति में शुभ का आधान करना अर्थात् शुचिता लाना व व्यवस्था को न्यायपूर्ण बनाना हमारा उद्देश्य है। इसके लिए तीन मुख्य मुद्दे कालाधन वापस लाना, भ्रष्टाचार मिटाना तथा वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्थाओं को बदलना, यह श्रद्धेय स्वामी जी महाराज का संकल्प है, अध्यात्मिक व आर्थिक शक्ति सम्पन्न राष्ट्र का निर्माण, यह हम सबका व श्रद्धेय स्वामी जी महाराज का ध्येय है।

सेवा व आन्दोलन– सभी राजनैतिक दल व राजनेताओं को भ्रष्ट बताकर केवल खुद को देशभक्त व ईमानदार कहने मात्र से राष्ट्र का निर्माण व विकास नहीं हो सकता है। उसके लिए एक गहरी सोच, आध्यात्मिक न्यायवाद से युक्त प्रामाणिक भारतीय विचारधारा, लम्बा संघर्ष व दीर्घकालीन तप की आवश्यकता होती है। जिन्दगी में कहीं भी शॉर्ट-कट नहीं होता, पिछले 25 वर्षों से श्रद्धेय स्वामी जी महाराज देश के एक-एक प्रान्त, जिले व तहसीलों में घूम-घूम कर लगभग 12 लाख किमी० की यात्रा करके लगभग 12 करोड़ लोगों की सभायें व योग शिविर सम्पन्न किये हैं। एक गरीब व्यक्ति की वास्तविक लाचारी व मजबूरी से करुणावश द्रवितहृदय होकर उसे उसका हक व न्याय दिलाने के लिए ही पिछले पाँच वर्ष से श्रद्धेय स्वामी जी महाराज व भारत स्वाभिमान के करोड़ों कार्यकर्त्ता कालाधन, भ्रष्टाचार व व्यवस्था परिवर्तन हेतु निरन्तर सेवा व आन्दोलनात्मक कार्यों में जुटे हुए हैं।

कालाधन वापस आने से आपको व राष्ट्र को क्या मिलेगा?– कालाधन वापस आने से आपका, हमारा व राष्ट्र का विकास किस प्रकार हो पायेगा, इसकी एक सम्पूर्ण योजना स्वामी जी महाराज ने देशवासियों के समक्ष रखी है। लगभग एक हजार लाख करोड़ के कालेधन में से कालेधन का कम से कम 30% तो हम शीघ्र ही किसी भी कीमत पर देश को दिलाकर रहेंगे और इससे सबके जीवन में समृद्धि लायेंगे। कालाधन वापस आने से एक-एक जिले को लगभग 50 हजार करोड़ से एक लाख करोड़ और एक-एक गाँव को कम से कम 50 से 100 करोड़ मिलेगा। कालेधन को देश के विकास में लगाकर भारत को परम वैभवशाली सुपर-पॉवर बनाने के 10 आयाम हैं। कालाधन जब विकास के इन 10 क्षेत्रों में लगेगा तो सभी समस्याओं का समाधान होगा और इससे हम केवल भारत को ही नहीं बचायेंगे अपितु पूरी दुनियाँ को हम ही चलायेंगे।

1. स्वास्थ्य (हेल्थ) **2.** शिक्षा (एजुकेशन) **3.** शोध में (रिसर्च) **4.** देश में ग्रामोद्योग, लघु उद्योगों व स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन देकर उत्पादन के प्रत्येक क्षेत्र में देश को आत्म-निर्भर बनाना। **5.** ढाँचागत मूलभूत सुविधाएँ (वर्ल्ड क्लास इन्फ्रास्ट्रक्चर) **6.** किसान आय आयोग बनाकर किसानों को उनकी फसल का न्यूनतम लाभकारी मूल्य दिलाना (मिनीमम बेनिफिशियल प्राइस) **7.** सेना का आधुनिकीकरण **8.** विद्युत क्षेत्र (इलेक्ट्रिक सेक्टर) **9.** जल प्रबन्धन (वाटर मैनेजमेन्ट) **10.** कचरा प्रबन्धन (वेस्ट मैनेजमेन्ट)

परिवर्तन के लिए पूरा देश तैयार– परिवर्तन के लिए आज पूरा देश तैयार है यदि हमने लोगों को परिवर्तन के इस अभियान से नहीं जोड़ा तो वे कहीं और जुड़ जायेंगे तथा सम्भव है राह से भटककर वे निराश हो जायें और परिवर्तन को गलत दिशा में ले जाने की कोशिश करें। अत: देश बचाने के लिए सभी राष्ट्र भक्तों को भारत स्वाभिमान से जोड़ें।

देश को बचाने के लिए कम से कम 2 माह का समय अवश्य दें– योग व आध्यत्म के द्वारा जीवन में तथा तीन मुद्दों के द्वारा राजनीति में यदि शुभ का आधान करके हमें एक वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम करना है तो प्रत्येक राष्ट्रभक्त नागरिक को 4 महीने, 4 नहीं तो 3 महीने और यदि 3 भी नहीं तो 1 से 2 महीने का समय तो अवश्य ही देश को बचाने के लिए समर्पित करना है। हमें चारित्रिक, आर्थिक, आपराधिक व कृतघ्नता के दोषों से मुक्त रहकर तथा कृतज्ञता से युक्त होकर राष्ट्रसेवा व संगठनसेवा में लगकर एक आध्यात्मिक, आर्थिक शक्ति सम्पन्न, स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारवान व परमवैभवशाली राष्ट्र का निर्माण करना है। **"सेवाधर्म: परमगहनो योगिनाम् अपि अगम्य:" (नीतिशकतम्)।**